टिप्पणी

11

कीमत और मात्रा का निर्धारण

अध्याय 9 में आप पढ़ चुके हैं कि कीमत में परिवर्तन का किसी वस्तु की मांग पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है। अध्याय 10 में उसी प्रकार का अध्ययन किसी वस्तु की आपूर्ति के विषय में किया गया। वास्तव में मांग और आपूर्ति दोनों पर ही कीमत में परिवर्तन का प्रभाव पड़ता है। किन्तु एक मनोरंजक बात यह ध्यान देने की है कि किसी वस्तु की मांग और आपूर्ति दोनों में परिवर्तन का भी वस्तु की कीमत पर प्रभाव पड़ता है। अब प्रश्न यह उठता है कि बाजार में किसी वस्तु की कीमत कैसे निर्धारित होती है? कौन से कारक वस्तु की कीमत पर प्रभाव डालते हैं। किसी वस्तु की मांग और आपूर्ति में परिवर्तन उसकी कीमत को कैसे प्रभावित करते हैं यह इस पाठ की विषय सामग्री है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप समझ सकेंगे :

- कीमत निर्धारण से क्या अभिप्राय है;
- मांग और आपूर्ति वक्रों की सहायता से कीमत निर्धारण की व्याख्या;
- संतुलन कीमत को समझना और ग्राफ पर अंकित करना;
- मांग और आपूर्ति में परिवर्तनों का किसी वस्तु की कीमत और मात्रा पर क्या प्रभाव पड़ता है?

11.1 कीमत का अर्थ

जब एक विक्रेता वस्तु को बेचता है तो वह उसका मुद्रा से विनिमय करता है। क्रेता वस्तु और सेवाओं के बदले में विक्रेता को मुद्रा का भुगतान करता है। **मुद्रा की वह मात्रा जो एक क्रेता वस्तु या सेवा की एक इकाई के बदले में विक्रेता को भुगतान करता है, वस्तु या सेवा की कीमत कहलाती है।** उदाहरण के लिए एक क्रेता एक लीटर पूर्ण मलाई युक्त दूध के लिए 36 रु. का भुगतान करता है तो पूर्ण मलाई युक्त दूध की कीमत 36 रु. प्रति लीटर होगी।

सामान्यतया विक्रेता का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना होता है। लाभ कुल आगम और कुल लागत का अन्तर होता है। कुल आगम से अभिप्राय उत्पादक की उस कुल मुद्रा प्राप्ति से है जो वह दी हुई उत्पादन मात्रा को बेचकर प्राप्त करता है। कुल लागत से अभिप्राय उस समस्त व्यय से है जो एक उत्पादक वस्तु की उस मात्रा के उत्पादन पर खर्च करता है।

विक्रेता उसके द्वारा आपूर्ति की जाने वाली वस्तु की कीमत निश्चित करता है। किसी वस्तु की बाजार कीमत वह कीमत है जिस पर उसे बाजार में बेचा जाता है। किसी वस्तु की कीमत निश्चित करते समय एक विक्रेता, अधिकतम लाभ कमाने के अतिरिक्त बहुत से कारक अपने ध्यान में रखता है। किसी वस्तु की कीमत को निश्चित करने में कुछ महत्वपूर्ण कारक जो किसी विक्रेता के निर्णय पर प्रभाव डालते हैं, नीचे दिये गए हैं।

(i) **उत्पादन की लागत :** विक्रेता वस्तु की ऐसी कीमत निश्चित करता जो वस्तु की प्रति इकाई उत्पादन लागत से अधिक हो। वस्तु की प्रति इकाई कीमत और प्रति इकाई उत्पादन लागत में अन्तर प्रति इकाई लाभ होता है। इस प्रकार प्रति इकाई कीमत और प्रति इकाई उत्पादन लागत में अन्तर जितना अधिक होगा लाभ की सीमा भी उतनी ही अधिक होगी। इसलिए किसी विक्रेता द्वारा वस्तु की कीमत निश्चित करने में प्रति इकाई उत्पादन लागत बहुत ही महत्वपूर्ण है।

(ii) **अन्य विक्रेताओं द्वारा निश्चित की गई कीमत :** अपनी वस्तु की कीमत निश्चित करने समय, विक्रेता अन्य विक्रेताओं द्वारा उसके समान वस्तु की निश्चित की गई कीमत पर भी विचार करता है। यदि एक विक्रेता अपनी वस्तु की ऐसी कीमत निश्चित करता है, जो अन्य विक्रेताओं द्वारा उसी प्रकार की वस्तु की निश्चित कीमत से बहुत अधिक है तो वह वस्तु की अधिक मात्रा बेचने में सफल नहीं होगा। इसलिए अपनी वस्तु की बिक्री में वृद्धि करने के लिए उसे अपनी वस्तु की कीमत घटानी पड़ेगी। इसलिए एक वस्तु के विक्रेता के लिए यह भी बहुत महत्वपूर्ण है कि वह अधिक लाभ कमाने के लिए अपनी वस्तु की ऐसी कीमत निश्चित करे जो दूसरे विक्रेताओं की कीमत के तुलनीय हो।

(iii) **विभिन्न कीमतों पर वस्तु की संभावित बिक्री :** विक्रेता यह भी ध्यान रखता है कि वह विभिन्न कीमतों पर वस्तु की कितनी मात्रा बेचने में समर्थ होगा। इसलिए उसके द्वारा वस्तु की कीमत ऐसी निश्चित की जानी चाहिए कि वस्तु की बेची गई कुल मात्रा से उसे अधिकतम लाभ प्राप्त हो सके।

पाठगत प्रश्न 11.1

1. मान लो आप बाजार में टमाटर के विक्रेता हैं। उन कारकों के नाम दो जिन्हें आप अपने द्वारा बेचे जाने वाले टमाटर की कीमत निश्चित करते समय ध्यान में रखोगे।
2. यदि डीजल के कीमत बढ़ने के कारण परिवहन लागत बढ़ जाती है तो आपके द्वारा निश्चित की गई टमाटर की कीमत पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

11.2 कीमत का अर्थ और कीमत का निर्धारण

यदि विक्रेता वस्तु की ऊँची कीमत निश्चित करता है तो वस्तु की आपूर्ति की मात्रा उसकी मांग की मात्रा से अधिक हो सकती है और यदि वह वस्तु भी नीची कीमत निश्चित करता है तो वस्तु की मांग की मात्रा उसकी आपूर्ति की मात्रा से अधिक हो सकती है। आप पहले ही पढ़ चुके हैं कि मांग के नियम के अनुसार यदि मांग को प्रभावित करने वाले अन्य सभी कारक स्थिर रहते हैं तो किसी वस्तु का क्रेता कम कीमत पर वस्तु की अधिक मात्रा खरीदता है और ऊँची कीमत पर कम। आपूर्ति के नियम के अनुसार यदि आपूर्ति को प्रभावित करने वाले अन्य कारक स्थिर रहते हैं तो वस्तु का विक्रेता, ऊँची कीमत पर वस्तु की अधिक मात्रा बेचने को तत्पर होता है और कम कीमत पर कम। क्रेता का उद्देश्य कम से कम खर्च कर अधिक से अधिक संतुष्टि प्राप्त करना होता है और विक्रेता का उद्देश्य अधिकतक लाम कमाना होता है। यदि किसी कीमत पर वस्तु की मांग की मात्रा तथा आपूर्ति की मात्रा बराबर होती हैं, तो उसे वस्तु की सन्तुलन कीमत कहते हैं। इस प्रकार वस्तु की कीमत बाजार में मांग और आपूर्ति की शक्तियों द्वारा निर्धारित होती है। किन्तु कुछ वस्तुओं की कीमत सरकार द्वारा निश्चित की जाती है जिससे कि उपभोक्ताओं और उत्पादकों के हितों की रक्षा की जा सके। इस अध्याय में हम यह अध्ययन करेंगे कि किसी वस्तु की कीमत मांग और आपूर्ति की शक्तियों द्वारा किस प्रकार निर्धारित होती है।

11.3 सन्तुलन कीमत का अर्थ

सन्तुलन का शाब्दिक अर्थ उस स्थिति से है जहां से परिवर्तन की प्रवृत्ति न हो। दूसरे शब्दों में संतुलन वह स्थिति है जहां सन्तुलन को निर्धारित करने वाली शक्तियाँ सन्तुलन में हो या एक दूसरे के बराबर हों। यहाँ सन्तुलन कीमत को निर्धारित करने वाली शक्तियाँ वस्तु की मांग और आपूर्ति की मात्राएं हैं। **जिस कीमत पर किसी वस्तु की मांगी गई मात्रा उसकी आपूर्ति की मात्रा के बराबर हो उसे सन्तुलन कीमत कहते हैं।**

सन्तुलन कीमत पर वस्तु की मांगी गई मात्रा उसकी आपूर्ति की मात्रा के बराबर होती है। वस्तु की यह मात्रा संतुलन मात्रा कहलाती है।

11.4 सन्तुलन कीमत का निर्धारण

व्यवहारिक जीवन में जिस कीमत पर एक विक्रेता/फर्म किसी वस्तु को बेचना चाहता है, उसकी आपूर्ति की मात्रा उसकी मांग की मात्रा से अधिक या कम हो सकती है। इसलिए यह कीमत वस्तु की सन्तुलन कीमत नहीं होती। अब प्रश्न यह उठता है कि सन्तुलन कीमत कैसे प्राप्त होती है? सारणी 11.1 में विभिन्न कीमतों पर दी गई बाजार मांग और बाजार आपूर्ति की अनुसूची पर विचार करो। आप पहले ही पाठ 9 और 10 में क्रमशः किसी वस्तु की बाजार मांग और आपूर्ति अनुसूची के विषय में पढ़ चुके हो।

सारणी 11.1 टमाटर की मांग व आपूर्ति की मात्रा

टमाटर की कीमत (प्रति किलो रु. में)	मांग की मात्रा प्रति दिन (कि.ग्रा.)	आपूर्ति की मात्रा प्रति दिन (कि.ग्रा.)
20	100	300
18	150	250
16	**200**	**200**
14	250	150
12	300	100

सारणी 11.1 में आप देख सकते हैं कि जब टमाटरों की कीमत 20 रु. प्रति कि.ग्रा. है तो विक्रेता 300 कि.ग्रा. टमाटर बेचने को तत्पर है किन्तु क्रेता केवल 100 कि.ग्रा. टमाटर खरीदना चाहते हैं। यदि कीमत घटकर 18 रु. प्रति कि.ग्रा. हो जाती है तो मांग की मात्रा बढ़कर 150 कि. ग्रा. किन्तु आपूति की मात्रा घटकर 250 कि.ग्रा. टमाटर रह जाती है। दोनों स्थिति में टमाटर की आपूर्ति की मात्रा उनकी मांग की मात्रा से अधिक है जो टमाटरों की आपूर्ति आधिक्य को दर्शाता है। परिणामस्वरूप टमाटरों की कीमत में और गिरावट होगी।

अब आपूर्ति आधिक्य के कारण, टमाटरों की कीमत घटकर 16 रु. प्रति कि.ग्रा. हो जाती है। इस कीमत पर क्रेता 200 कि.ग्रा. टमाटर खरीदने को तत्पर है और विक्रेता भी टमाटर की वही मात्रा, अर्थात 200 कि.ग्रा. टमाटर बेचने को तत्पर है। सन्तुलन कीमत इसी प्रकार प्राप्त होती है। इस प्रकार 16 रु. प्रति कि.ग्रा. टमाटर की सन्तुलन कीमत होगी जिस पर टमाटरों की मांग की मात्रा उनकी आपूर्ति की मात्रा 200 कि.ग्रा. पर बराबर है।

11.5 असंतुलन की स्थितियाँ और संतुलन स्थिति का समायोजन

सारणी 11.1 में देखो कि 12 रु. और 14 रु. कीमत (संतुलन कीमत से कम) पर मांगी गई मात्रा और आपूर्ति की मात्रा बराबर नहीं हैं। इसी प्रकार 20 रु. और 18 रु. कीमत (संतुलन कीमत से अधिक) पर भी मांगी गई मात्रा और आपूर्ति की मात्रा समान नहीं हैं। ये दोनों स्थितियाँ असंतुलन की स्थितियाँ हैं। आओ, अब इसकी व्याख्या करें।

उस स्थिति पर विचार करो जिसमें टमाटरों की बाजार कीमत 12 रु. प्रति किलो ग्राम है। इस कीमत पर क्रेता 300 कि.ग्रा. टमाटर खरीदने के लिए तत्पर हैं जबकि विक्रेता केवल 100 कि. ग्रा. बेचना चाहते हैं। इसी प्रकार जब टमाटरों की कीमत 14 रु. प्रति कि.ग्रा. है तो टमाटरों की मांगी गई मात्रा घटकर 250 कि.ग्रा. रह जाती है और आपूर्ति की मात्रा बढ़कर 150 कि. ग्रा. हो जाती है। दोनों ही स्थितियाँ बाजार में टमाटरों की आधिक्य मांग को दर्शाती हैं। इससे टमाटरों की कीमत में और वृद्धि होगी। टमाटरों की कीमत बढ़ती रहेगी जब तक कि कीमत वहां पहुँच जाये जिस पर टमाटरों की मांगी गई मात्रा उसकी आपूर्ति की मात्रा के बराबर न हो जाये। इस प्रकार टमाटरों की संतुलन कीमत 16 रु. प्रति कि.ग्रा. होगी जिस पर टमाटरों की मांगी गई मात्रा तथा आपूर्ति की मात्रा 200 कि.ग्रा. पर बराबर हैं।

दूसरी ओर, जब टमाटरों की कीमत बढ़कर 18 रु. प्रति कि.ग्रा. हो जाती है तो मांगी गई मात्रा 150 कि.ग्रा. है तथा आपूर्ति की मात्रा 250 कि.ग्रा. है। अर्थात टमाटरों की आपूर्ति की मात्रा उनकी मांगी गई मात्रा से अधिक है। यह टमाटरों की आपूर्ति आधिक्य की स्थिति है। इससे टमाटरों की कीमत घटेगी और कीमत तब तक घटती रहेगी जब तक कि यह 16 रु. संतुलन कीमत पर न पहुँच जाये, जिसपर टमाटरों की मांगी गई मात्रा और आपूर्ति की मात्रा 200 कि.ग्रा. बराबर हैं।

पाठगत प्रश्न 11.2

1. मान लीजिए, आप एक टमाटरों के विक्रेता हैं और आपके पास बिक्री के लिए 100 कि. ग्रा. टमाटर हैं। टमाटरों की बाजार कीमत 20 रु. प्रति कि.ग्रा. है। इस कीमत पर टमाटर की मांग केवल 60 कि.ग्रा. है। इसका आपके द्वारा टमाटरों की कीमत निर्धारण करनेपर क्या प्रभाव पड़ेगा?
2. प्रश्न न. 1 के समान यदि 20 रु. प्रति कि.ग्रा. कीमत पर टमाटरों की मांग 150 कि.ग्रा. है तो इसका आपके द्वारा टमाटरों की कीमत निर्धारण करने पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
3. सही उत्तर पर (√) चिन्ह लगाइये।
   मांग आधिक्य एक ऐसी स्थिति है जहां:
   (अ) किसी वस्तु की मांग की मात्रा इसकी आपूर्ति की मात्रा के बराबर होती है।
   (ब) किसी वस्तु की मांग की मात्रा उसकी आपूर्ति की मात्रा से अधिक होती है।
   (स) किसी वस्तु की आपूर्ति की मात्रा उसकी मांग की मात्रा से अधिक होती है।
4. सही उत्तर पर (√) चिन्ह लगाइये।
   आपूर्ति आधिक्य एक ऐसी स्थिति है जहां:
   (अ) किसी वस्तु की आपूर्ति की मात्रा उसकी मांग की मात्रा के अधिक होती है।
   (ब) किसी वस्तु की आपूर्ति की मात्रा उसकी मांग की मात्रा के बराबर है।
   (स) किसी वस्तु की आपूर्ति की मात्रा उसकी मांग की मात्रा से कम है।
5. सही उत्तर पर (√) चिन्ह लगाइये।
   यदि किसी दी गई कीमत पर किसी वस्तु की मांग की मात्रा उसकी आपूर्ति की मात्रा से अधिक है तो:
   (अ) वस्तु की कीमत नहीं बदलती।
   (ब) कीमत घटने लगती है।
   (स) कीमत बढ़ने लगती है।
6. यदि किसी दी हुई कीमत पर किसी वस्तु की आपूर्ति की मात्रा उसकी मांग की मात्रा से अधिक होती है तो :
   (अ) कीमत घटने लगती है।
   (ब) कीमत अपरिवर्तित रहती है।
   (स) कीमत बढ़ने लगती है।

11.6 मांग में परिवर्तन का सन्तुलन कीमत और मात्रा पर प्रभाव

आप पढ़ चुके हैं कि किसी वस्तु की सन्तुलन कीमत वह कीमत है जिस पर वस्तु की मांग की मात्रा उसकी आपूर्ति की मात्रा के बराबर होती है। परन्तु क्या होता है यदि किसी वस्तु की मांग में वृद्धि हो जाती है और आपूर्ति पूर्ववत रहती है। किसी वस्तु की मांग में वृद्धि उसकी सन्तुलन कीमत तथा मांग की मात्रा व आपूर्ति की मात्रा में वृद्धि लाएगी। दूसरी ओर यदि किसी वस्तु की मांग घट जाती है और आपूर्ति पूर्ववत रहती है तो इससे वस्तु की संतुलन कीमत, मांग की मात्रा तथा आपूर्ति की मात्रा में कमी आयेगी।

11.7 आपूर्ति में परिवर्तन का सन्तुलन कीमत और सन्तुलन मात्रा पर प्रभाव

जब किसी वस्तु की आपूर्ति की मात्रा में वृद्धि होती है और इसकी मांग पूर्ववत रहती है तो संतुलन कीमत घट जायेगी किन्तु संतुलन मांग व आपूर्ति की मात्रा बढ़ जायेगी। दूसरी ओर जब वस्तु की आपूर्ति घट जाती है और उसकी मांग पूर्ववत रहती है तो इसकी सन्तुलन कीमत बढ़ जायेगी किन्तु सन्तुलन मांग व आपूर्ति की मात्रा घट जायेगी।

पाठगत प्रश्न 11.3

1. किसी वस्तु की सन्तुलन कीमत पर क्या प्रभाव पड़ेगा, जब
   (अ) इसकी मांग में वृद्धि हो जाती है किन्तु आपूर्ति पूर्ववत रहती है।
   (ब) इसकी आपूर्ति में वृद्धि हो जाती है किन्तु मांग पूर्ववत रहती है।
   (स) इसकी मांग घट जाती है किन्तु आपूर्ति पूर्ववत रहती है।
   (द) इसकी आपूर्ति घट जाती है किन्तु मांग पूर्ववत रहती है।
2. किसी वस्तु की संतुलन मांग व आपूर्ति की मात्रा पर क्या प्रभाव पड़ेगा, जब
   (अ) इसकी मांग बढ़ जाती है और आपूर्ति पूर्ववत ही रहती है।
   (ब) इसकी आपूर्ति बढ़ जाती है और मांग पूर्ववत रहती है।
   (स) इसकी मांग घट जाती है और आपूर्ति पूर्ववत रहती है।
   (द) इसकी आपूर्ति घट जाती है और मांग पूर्ववत रहती है।

आपने क्या सीखा

- मुद्रा की मात्रा जो एक क्रेता वस्तु या सेवा की एक इकाई के बदले में विक्रेता को देता है, वह वस्तु या सेवा की कीमत कहलाती है।
- सन्तुलन कीमत वह कीमत है जिस पर किसी वस्तु की मांग तथा आपूर्ति की मात्रा दोनों बराबर होती हैं।

- संतुलन कीमत का निर्धारण किसी वस्तु की मांग और आपूर्ति की बाजार शक्तियों के द्वारा होता है।
- मांग आधिक्य एक ऐसी स्थिति है जब एक दी गई कीमत पर किसी वस्तु की मांग की मात्रा उसकी आपूर्ति की मात्रा से अधिक होती है।
- आपूर्ति आधिक्य एक ऐसी स्थिति है जब एक दी गई कीमत पर किसी वस्तु की आपूर्ति की मात्रा उसकी मांग की मात्रा से अधिक होती है।
- जब किसी वस्तु की मांग आधिक्य होती है तो उसकी कीमत बढ़ने लगती है और उस समय तक बढ़ती रहती है जब तक वह संतुलन कीमत पर न पहुँच जाये।
- जब किसी वस्तु की आपूर्ति आधिक्य होती है तो उसकी कीमत घटने लगती है और उस समय तक घटती रहती है जब तक वह संतुलन कीमत पर न पहुँच जाये।
- जब किसी वस्तु की मांग में वृद्धि होती है और आपूर्ति पूर्ववत रहती है तो संतुलन कीमत तथा मांग व आपूर्ति की मात्रा दोनों में वृद्धि होती है।
- जब किसी वस्तु की मांग घटती है और आपूर्ति पूर्ववत रहती है तो संतुलन कीमत तथा संतुलन मांग व आपूर्ति की मात्रा दोनों घट जाती हैं।
- जब किसी वस्तु की आपूर्ति में वृद्धि होती है और उसकी मांग पूर्ववत रहती है तो संतुलन कीमत घटेगी तथा संतुलन मांग व आपूर्ति की मात्रा बढ़ेंगी।
- जब किसी वस्तु की आपूर्ति घट जाती है और उसकी मांग पूर्ववत रहती है तो संतुलन कीमत बढ़ेगी तथा मांग और आपूर्ति की संतुलन मात्रा घट जायेगी।

पाठान्त प्रश्न

1. कीमत से क्या अभिप्राय है?
2. संतुलन कीमत से क्या अभिप्राय है?
3. संतुलन मात्रा से क्या अभिप्राय है?
4. किसी वस्तु की संतुलन कीमत का निर्धारण कैसे होता है?
5. किसी वस्तु की कीमत पर क्या प्रभाव पड़ता है जब दी हुई कीमत पर
   (अ) किसी वस्तु की मांग की मात्रा उसकी आपूर्ति की मात्रा से अधिक होती है।
   (ब) किसी वस्तु की आपूर्ति की मात्रा उसकी मांग की मात्रा से अधिक होती है।
   (स) किसी वस्तु की मांग की मात्रा उसकी आपूर्ति की मात्रा के बराबर होती है।
6. किसी वस्तु की संतुलन कीमत पर क्या प्रभाव पड़ता है जब उसकी मांग में वृद्धि हो जाती है और आपूर्ति पूर्ववत रहती है।
7. किसी वस्तु की आपूर्ति में कमी का उसकी संतुलन कीमत तथा मांग और आपूर्ति की संतुलन मात्रा पर क्या प्रभाव पड़ता है जब उसकी मांग पूर्ववत रहती है।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

पाठगत प्रश्न 11.1

1. (i) उत्पादन लागत

   (ii) समान वस्तु की अन्य विक्रेताओं द्वारा निर्धारित कीमत

   (iii) विभिन्न कीमतों पर वस्तु की संभावित बिक्री

2. टमाटरों की कीमत बढ़ेगी।

पाठगत प्रश्न 11.2

1. टमाटरों की कीमत घटेगी।
2. टमाटरों की कीमत बढ़ेगी।
3. (ब)
4. (अ)
5. (स)
6. (अ)

पाठगत प्रश्न 11.3

1. (अ) संतुलन कीमत बढ़ेगी।

   (ब) संतुलन कीमत घटेगी।

   (स) संतुलन कीमत घटेगी।

   (द) संतुलन कीमत बढ़ेगी।

2. (अ) बढ़ेगी

   (ब) बढ़ेगी

   (स) घटेगी

   (द) घटेगी